प्रकृति के सजग चितेरे : कवि सुमित्रानन्दन पंत

Dr Umesh Kumar Singh
Associate Professor,
Department of Hindi and Comparative Literature,
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya,
Gandhi Hills, Wardha-442001 (Maharashtra) Bharat

सारांश : सुमित्रानन्दन पंत छायावादी काव्यधारा के प्रमुख चार स्तंभों में प्रमुख जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा आदि में से एक माने जाते हैं। उनके काव्य में प्रकृति का अद्भुत् चित्रण हुआ है। इसका श्रेय उन्होंने प्रकृति के निरीक्षण एवं अपनी जन्मभूमि प्रदेश कुमांचल को माना है। उन्होंने बताया है कि मनोरम एवं हरि-भरी प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण वातावरण का प्रभाव मन पर पडना स्वभाविक होता है। यह वातावरण मनुष्य के व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करता है। सुमित्रानन्दन पंत की प्रकृति जड नहीं अपितु चेतन होने के साथ- साथ मानवीय भावना के सरोकारों से ओत-प्रोत प्रतीत होती है। इस शोधपत्र में उनकी प्रकृति सम्बन्धी कविताओं के प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करना है कि उनका प्रकृति चित्रण कितना सजग, अभूतपूर्व एवं अनौखा है।

प्रमुख शब्द / Key words : मानवीयकरण – humanization, शीतल पवन – child wind, पलनों में – in the cradles, मृदु – tender, बेसुध – insensitive, मांसल- Flashy, विस्मृत- Forgetfulness, सुनागरिक - Good citizen, प्रफुल्लित-Cheerful.

शोध प्रविधि / Research Methodology : प्रस्तुत शोधपत्र को लिखने के लिए तथा शोध को अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक शोध प्रविधिओं का प्रयोग किया गया है।

सुमित्रानन्दन पंत छायावादी काव्यधारा के अनूठे कवि हैं। इन्हें छायावाद का चौथा स्तम्भ माना जाता है। आपका जन्म 20 मई 1900 उत्तर भारत में कसौनी, अल्मोडा में हुआ था। कसौनी जनपद प्रकृति की सुंदरता के बीच बसा हुआ है। पंत जी के जन्म के छः घंटे बाद ही इनकी माता इस दुनियाँ को छोडकर स्वर्ग सिधार गई थीं। इस घटना का प्रभाव इनके चिर कुमार जीवन पर बहुत गहरा पडा। इसके बाद इनका पालन पोषण इनकी दादी जी ने किया था। छायावादी काव्य की विशेषता यह रही है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता इस धारा के कवियों ने स्वछन्द कल्पना के लिए प्रकृति का सहारा लिया है। पंत के काव्य में प्रकृति के लिए प्रेम और कल्पना की ऊंची उडान है।

छायावाद के चार कवि प्रमुख माने जाते हैं। जिनमें जय शंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा का परिगणन किया गया है। पंत ने स्वयं लिखा है – कविता की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति के निरीक्षण से प्राप्त हुई है। इसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कुमांचल (अल्मौडा, वर्तमान उतरांचल में) प्रदेश को है। कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है कि मैं घंटो बैठकर प्रकृति के दृश्यों को एकटक देखा करता था। ऐसा प्रतीत होत है कि मां की ममता से रहित उनके जीवन में मानो प्रकृति ही उनकी मां हो। उत्तर प्रदेश के अल्मोडा के पर्वतीय अंचल की गोद में पले बढे और बड़े हुए। पंत ने स्वयं स्वीकार किया है कि प्रकृति के मनोरम वातावरण से उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पडा।

सुमित्रानन्दन पंत की प्रमुख रचनाओं का क्रम इस प्रकार है: 1.वीणा-1919, 2. ग्रन्थि -1920, 3. पल्लव – 1926, 4. गुंजन – 1932, 5. युगान्त – 1937, 6. युगवाणी- 1948, 7. ग्राम्या – 1940, 8. स्वर्ण किरण – 1947, 9. स्वर्ण धूलि – 1947, 10. उत्तरा – 1949, 11. युग पथ – 1949, 12. चिदम्बरा – 1958, 13. कला और बूढा चांद – 1959 14. लोकायतन – 1964,

15. गीतहंस- 1969, 16. कहानियाँ पांच – 1938, 17. उपन्यास हार- 1960, 18. आत्मकथामक संस्मरण – साठ वर्ष : एक रेखांकन – 1963. तथा सुमित्रानन्दन पंत को प्राप्त पुरस्कारों में 1 पद्मभूषण – 1961, 2 ज्ञानपीठ – 1968, 3 कलाओं और बूढा चांद के लिए – साहित्य अकादमी पुरस्कार 4 लोकायत एवं सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, 4 चिदम्बरा पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार। कौसानी चाय बागान के व्यवस्थापक के परिवार में जन्में सुमित्रानन्दन पंत की मृत्यु 28 दिसम्बर 1977 को इलाहबाद उत्तर प्रदेश में हुई।

सुमित्रानन्दन पंत का प्रकृति के साथ चित्रण अभूतपूर्व दृष्टिगोचर होता है। झरना, बर्फ़, पुष्प, लता, भंवरा, गुंजन, उषा किरण, शीतल पवन, तारों की चुनरी ओढे गंगन से उतरती हुई सन्ध्या इत्यादि सभी सहज रूप से काव्य के उत्पादक बने हैं।

मानव कविता में कवि पंत ने प्रकृति के सौंदर्य का दर्शन समग्र जीवन के रूप में करते हैं।

सुन्दर है विहग सुमन सुन्दर ।
मानव ! तुम सबसे सुन्दरतम ॥1

प्रकृति का मानवीकरण छायावाद में विशेष कहें तो अनुचित नहीं होगा। यह मानवीकरण भी नारी के रूप में हुआ है। प्रकृति के कवि प्रकृति के लिए मां, सखि, प्रेयसी जैसी उपमाओं से कहकर कविताओं की रचना करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

"छोड द्रुमों की मृदु छाया
तोड प्रकृति से भी माया
वाले । तेरे बाल-जाल में
कैसे उलझा हूँ लोचन
भूल अभी से इस जग को"॥2

उनकी कविताओं में प्रकृति साकार उठी सी प्रतीत होने लगती है। जैसे :-

"सिखा दो ना हे मधुप कुमार
मुझे भी अपने मीठे गान ।
कुसुम के चुने कटोरों से
करा दो ना कुछ कुछ मधुपान"॥3

सुमित्रानंदन पंत के स्वच्छन्द कविता संग्रह में छेनुए कविता के अंर्तमन नदी का वर्णन अद्वितीय है। नदी की तीव्र गति को देखकर मानव मन मचल और आनंद विभोर हो उठा सा प्रतीत होता है।

"ओ रंभाती नदियों / बेसुध कहाँ भागी जाती हो ।
वंशी-रव / तुम्हारे ही भीतर है ओ फेन-गुच्छ ।
लहरों की पूछ उठाए / दौडती नदियाँ ॥
इस पार उस पार भी देखो / जहाँ फूलों के कूल
सुनहले धान के खेत हैं / कल-कल, छल-छल
अपनी ही विरह-व्यथा / प्रीति-कथा कहते मत चली जाओ" ॥4

कवि नदियों को गायों के रूप में चित्रित करता है और साथ ही उन्हें अंधी होकर प्रवाहित न होने को कहता है तथा धान और फूल का सौंदर्य भी देखने को कहता है। निरु उद्देश्य भागते रहना अर्थहीन है।

प्रस्तुत बादल कविता की पंक्तियाँ पंत जी की सौन्दर्य को निहारने की कला पर्याप्त सूक्षमता रूप में स्पस्ट और प्रकट हुई है उन्होने सौंदर्य के मनोहारी रूप स्थान स्थान प्रकट हुये हैं। उनकी सरलता हृदयंगम करने वाली है। इस कविता में मात्र नदी की ही नहीं, उमंग भर रही है। इसमेँ अनुभूति की मीठी तीव्रता है।

"जलशयों में कमल दलों सा
हमें खिलाता नित दिनकर
पर बालक सा वायु सकल दल
बिखरा देता चुभ सत्वर" ॥
"लघु लहरों के चल पलनों में
हमें भुलाता जब सागर ।
वहीं चील सा झपट बाँह गह
हमको ले जाता ऊपर"॥ 5

सुमित्रानन्दन पंत की कविताओं में सर्वाधिक प्रकृति वर्णन ही परिलक्षित होता है। इनके प्रकृति वर्णन में भिन्नता होते हुए भी कोयल और पपीहे की तान ही सुनाई देती है। पंत की प्रकृति जड नहीं बल्कि चेतन है। मानवीय भावनाओं से सराबोर हैं।

सुमित्रानन्दन पंत ने प्रकृति के अनेक रूप अपनी कविताओं में प्रस्तुत किए हैं। उतने अन्यत्र प्रतीत नहीं होते हैं। जैसे :

"चंचल पग दीप –शिखा के धर गृह मग वन में आया बंसा
सुलग हागुन का सूनापन , सौन्दर्य शिखाओं में अनन्त॥
पल्लव पल्लव में नवल रुधिर पत्रों में मांसल रंग खिला।
आया पीली-पीली लौ से पुष्पों के चित्रित दीप जला॥ 6

कवि के लिए प्रकृति उत्सव स्थल नहीं बल्कि उसके लिए यह अध्ययन शाला है। वह प्रकृति के सौन्दर्य से ऊर्जा और रस पाता है।

"हे सखि ! इस पावन अंचल से
मुझको भी निज मुख ढूढकर
अपनी विस्मृत सुखद गोद में
सोने दो सुख से क्षणभर"॥7

सुमित्रानंदन पंत पृकृति की उपेक्षा न करते हुए उनके सौन्दर्य में नए अर्थ और सार्थकता खोजते हैं। प्रकृति को निहारने का अर्थ केवल कुसुम, मारुत, खग, कुल को निहारने तक ह सीमित ही नहीं है। अपितु वसुंधरा के हर छोटे बड़े जीव को दृष्टि में लाना है। कवि दृष्टि तितली के चटक रंग के साथ धूधली वाली चींटी पर भी जाती है। सही मायने में यह उनकी विशेषता कही जा सकती है। कवि चींटी की करी क्षमता पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि चींटी निरंतर अपने कार्य में तन्मय अर्थात लगी रहही है। उसका भी अपना घर संसार होता है।

"चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रम जीवी, वह सुनागरिक" ॥
++++++++++++++++++++
विचरण करती श्रम में तन्मय।
वह जीवन की चिनगी अक्षय। 8

कवि ने अपनी कलख कविता मैं वास्तविक एवं सारगर्भित दृश्य चित्रित किया है। वह बाँसों के समूह/ झुंड में अर्थात झुरमुट में चहचहाते पक्षियों की आवाजों और भारी पैरों से उदास मन लिए अपने घरों को लौटते श्रमजीवियों की विरोधपूर्ण स्थिति को दर्शाते हुएकवि ने संध्या का अत्यंत व्यंजक चित्र प्रस्तुत किया है।

बांसो का झुरमुट।
संध्या का झुरमुट।
हैं चहक रही छिड़ियाँ
टीवी टी - टुट टुट
++++++++++
कुछ श्रमजीवी, धर डगमग डग
मानती है जीवन ! भारी पग। 9

सुमित्रानंदन पंत अपनी रचना ग्राम्या में ग्राम जीवन के अद्‌भुत रंगचित्र प्रतिपादित किए हैं जिससे प्रकृति के भी अनेक चित्र सम्मिलित हैं जिसमें ग्राम प्रकृति के अनेक चित्र शामिल किए गए हैं। पंत जी की रचना ग्राम चित्र कविता में कहते हैं वे अपनी रचना ग्राम चित्र जैसे –

"यह रवि-शशि का लोक-जहाँ हँसते हँसते समूह में उडु-गण
जहाँ चमकते विहग बदलते क्षण-क्षण विद्युत-प्रभ बन ।
यहाँ वनस्पति रहते रहती खेतों में हरियाली,
यहाँ धूल है, यहां ओंस है, कोकिला आम की डाली ।
ये रहते यहाँ और नीला नभ बोयी धरती ।
सूरज का चौडा प्रकाश ज्योत्सना चुपचाप विचरती ।
प्रकृति धाम यह तृण-तृण कण-कण जहाँ प्रफुल्लित जीवित ।
यहाँ अकेला मानव ही रे चिर विषण्ण जीवनमृत"॥ 10

निष्कर्ष (Conclusion) :- आज साहित्य में छायावादी दौर का भले ही अवसान हो चुका है किन्तु उसके समृद्धशाली और गौरवशाली दौर को कभी नहीं भुलाया और झुठलाया जा सकता है। इस प्रकार जब- जब छायावादी साहित्य की चर्चा होगी, तब-तब प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत को याद किया जाता रहेगा। ये चारों छायावादी साहित्य के आधार स्तम्भ और उस युग के विशेष कवि हैं। जब हिंदी कविता चलने का अभ्यास या इस प्रकार कहें कि चलना सीख रही थी। सुमित्रानंदन पंत ने हिंदी कविता को, न केवल सौम्य, सुकुमार और शासक्त भाषा के रूप को प्रतिष्ठित करने के साथ-साथ हिंदी साहित्य के लिए एक नई शैली भी प्रदान की है। उन्होने आजीवन अविवाहित रहकर साहित्य की सेवा की है।

कवि सुमित्रानंदन पंत के जीवन की पीड़ा के रिस्ते का प्रारम्भ उनके जन्म के कुछ घंटे बाद उनकी माँ के असमय मृत्यु के रूप में होता है। इनका लालन पालन इनकी दादी माँ के द्वारा किया गया था। माँ के अभाव ने बालक पंत को पिता के कुछ अधिक निकट ला दिया था। उनके पिता चाय के बागानों में प्रबन्धक एवं लकड़ी का व्यवसाय भी किया करते थे।

सुमित्रानंदन पंत की प्रकृति की निकटता के कारण ही उनकी रचनाओं में प्रकृति के सौन्दर्य का अनुपम वर्णन परिलक्षित होता है। यही वह प्रमुख कारण है कि उन्हें "प्रकृति का सुकुमार कवि" कहा जाता है। यह सर्वविदित है कि सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख स्तम्भ के रूप में जाने जाते हैं। छायावादी कवियों की कल्पनाशीलता देखते ही बनती है। इस संबंध में पंत जी कहा करते थे कि मुझे प्रकृति का अति निकट सानिध्य मिला है। इसकारण से प्रकृति को घंटों बैठकर निहारा करते थे। यही वह प्रमुख कारण है जिससे प्रक्रति के प्रति उनकी कविताओं में विशेष अनुराग स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है तथा उनकी कविताओं में प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ। वास्तव में कविता हमारे मनोभावों के ही शब्द चित्र होते हैं। उनकी चयनित कविताओं के

अंशों जैसे मोह मधुकरी, धेनुए, बादल, छाया एवं आँसू कविताओं के माध्यम से पंत जी को प्रकृति के सजग चितेरे कवि के रूप में सिद्ध करने का एक लघु प्रयास मात्र है।

संदर्भग्रंथ (Bibliography) :-

1. पंत, सुमित्रानंदन, आधुनिक कवि-2 साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 12 सम्मेलन मार्ग , इलाहाबाद मानव कविता, पृष्ठ सं. 33
2. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवाँ संस्करण1993 'पल्लव' राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं. 84
3. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवाँ संस्करण1993 'पल्लव' राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं. 76
4. वाजपेयी अशोक सं 2008 पंत, सुमित्रानंदन-'स्वच्छंद', राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002 पृष्ठ सं. 55
5. पंत, सुमित्रानंदन पल्लव, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002 पृष्ठ सं. 55
6. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवाँ संस्करण1993 युगपथ, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं. 13-14
7. वाजपेयी अशोक सं (2008) पंत, सुमित्रानंदन-स्वच्छंद, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002 पृष्ठ सं. 57
8. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड 2, (वर्ष 2004) राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि.1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002, पृष्ठ सं. 84-85
9. पंत, सुमित्रानंदन पंत (1998) युग पथ, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि, 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002 पृष्ठ सं. 20
10. पंत, सुमित्रानंदन पंत, ग्राम्या (2001) लोक भारती प्रकाशन महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1 कविता ग्राम चित्र, पृष्ठ सं.39